सच कहने की ताकत

जालंधर ब्रीज

साप्ताहिक समाचार पत्र

• JALANDHAR BREEZE • WEEKLY • YEAR-2 • 11 NOVEMBER TO 17 NOVEMBER 2020 • VOLUME- 16 • PAGES- 4 • RATE- 3/- • www.jalandharbreeze.com • RNI NO.:PUNHIN/2019/77863

Lic No : 933/ALC-4/LA/FN:1184

INNOVATIVE TECHNO INSTITUTE
CONSULTING DESIGN TRAINING

INNOVATIVE TECHNO INSTITUTE

ISO CERTIFIED 2015 COMPANY

STUDY, WORK & SETTLE IN ABROAD

Low Filing Charges &
*Pay money after the visa

IELTS | STUDY ABROAD

CANADA AUSTRALIA USA
U.K SINGAPORE EUROPE

E-mail : ankush@innovativetechin.com • hr@innovativetechin.com • Website : www.innovativetechin.com • FB/Innovativetechin • Contact : 9988115054 • 9317776663

REGIONAL OFFICE : S.C.O No. 10, Gopal Nagar, Near Batra Palace, Jal. • HEAD OFFICE : S.C.O No. 21-22, Kuldip Lal Complex, Highway Plaza, GT Road, Adjoining Lovely Professional University, Phagwara.

*T&C apply

बिहार के बाद अब बंगाल पर चढ़ाई की तैयारी, बना लिया एनडीए ने मेगा मास्टर प्लान

■ कोलकाता/ब्यूरो

भाजपा बिहार चुनाव में सफलता मिलने के बाद अगले साल अप्रैल-मई में होने वाले पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनावों के लिए अपनी रणनीति को अंतिम रूप दे रही है। पार्टी के सूत्रों ने बुधवार को यह जानकारी दी। उल्लेखनीय है कि बिहार विधानसभा चुनाव के मंगलवार को घोषित नतीजों के मुताबिक राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) को 243 सदस्यीय सदन में 125 सीटों पर जीत मिली है जिनमें से 74 सीटों के साथ भाजपा राज्य में दूसरी सबसे बड़ी पार्टी बनी है जबकि सहयोगी जदयू ने 43 सीटों पर जीत दर्ज की है। सूत्रों ने बताया कि भगवा पार्टी ने पश्चिम बंगाल की 294 सदस्यी विधानसभा में 200 से अधिक सीटों पर जीत दर्ज करने का लक्ष्य तय किया है और बिहार चुनाव होने के बाद अब उसका पूरा ध्यान राजनीतिक रूप से अहम पश्चिम बंगाल पर होगा जो 42 सदस्यों को लोकसभा भेजता है, यह संख्या बिहार से दो अधिक है। उन्होंने बताया कि पिछले लोकसभा चुनाव में 42 में से 18 सीटों को जीतकर भाजपा ने पश्चिम बंगाल में गहरी पैठ बना ली है (जो सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस से महज चार कम है) और राज्य की ममता बनर्जी सरकार पर आखिरी दौर का हमला शुरू करने के लिए बिहार चुनावों के संपन्न होने का इंतजार कर रही थी।

भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव और पश्चिम बंगाल के प्रभारी कैलाश विजयवर्गीय ने मंगलवार को जोर देकर कहा कि पश्चिम बंगाल में पार्टी की जीत बड़ी होगी और वह चुनाव में दो तिहाई बहुमत हासिल करेगी। उन्होंने कहा, '' पश्चिम बंगाल की जनता तृणमूल कांग्रेस के कुशासन से उब चुकी है और अब वे बदलाव चाहते हैं।'' राज्य इकाई के भाजपा अध्यक्ष दिलीप घोष ने उनका समर्थन करते हुए कहा, ''बिहार के बाद भाजपा के लिए पश्चिम बंगाल होगा।'' उन्होंने कहा, ''पड़ोसी राज्य बिहार में भगवा की लहर थी और यह तृणमूल की पश्चिम बंगाल सरकार का भी सफाया कर देगी। दोनों राज्यों में बस इतना अंतर होगा कि बिहार मेंहम करीब 15 साल से सत्ता में है जबकि पश्चिम बंगाल में हम चुनौती दे रहे हैं।'' भाजपा नेताओं के एक धड़े का मानना है कि बिहार चुनाव के नतीजों का असर सीमावर्ती इलाकों को छोड़ पश्चिम बंगाल में बहुत कम होगा लेकिन यह पार्टी कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ाने में सहायक होगा। राज्य के कई भाजपा नेताओं ने कहा कि बिहार चुनाव के नतीजों से संकेत ले पार्टी पश्चिम बंगाल में अपनी रणनीति को नए सिरे से धार दे रही है। तृणमूल कांग्रेस को घेरने के लिए भाजपा अबतक कुशासन, कानून-व्यवस्था, हिंसा, भ्रष्टाचार और राज्य सरकार द्वारा कोविड-19 से निपटने के तरीकों का मुद्दा उठा रही थी। पश्चिम बंगाल में भाजपा के वरिष्ठ नेता ने कहा, ''बिहार चुनाव के नतीजों से पता चला कि बेरोजगारी, मजदूरों का पलायन संकट का मुद्दा कई सीटों पर महत्वपूर्ण रहा। इसलिए हमें इन मुद्दों पर भी जोर देने की जरूरत है।'' हालांकि, सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस ने भाजपा के 200 से अधिक सीटें लाने के लक्ष्य का माखौल उड़ाया है। तृणमूल कांग्रेस के सांसद और प्रवक्ता सौगत रॉय ने कहा, ''जहां तक सवाल पश्चिम बंगाल की सत्ता में आने का है तो भाजपा अब भी स्वप्नलोक में है। अधिकतर सीटों पर उसकी जमानत जब्त हो जाएगी।

चीन से पूर्वी लद्दाख पर बिगड़ी बात सुलझ सकती है, भारत- चीन समझौते के कगार पर

■ नई दिल्ली/ब्यूरो

भारत और चीन पूर्वी लद्दाख में छह महीने से चल रहे गतिरोध को सुलझाने के कगार पर पहुंच रहे हैं। इसके तहत दोनों पक्षों के बीच समयबद्ध तरीके से गतिरोध वाले सभी स्थानों से सैनिकों और हथियारों को पीछे हटाने पर व्यापक सहमति बनने की संभावना है। आधिकारिक सूत्रों ने बुधवार को इस बारे में बताया। उन्होंने बताया कि प्रस्ताव के व्यापक खाके के तहत समझौता होने पर एक दिन में सशस्त्र कर्मियों को हटाने, पूर्वी लद्दाख में पैंगोंग झील के उत्तरी और दक्षिणी किनारे के खास क्षेत्रों से सैनिकों की वापसी और दोनों पक्षों द्वारा प्रक्रिया का सत्यापन शामिल है।

वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) के भारतीय हिस्से में छह नवंबर को चुसूल में भारतीय और चीनी सेनाओं के बीच आठवें दौर की उच्च स्तरीय सैन्य वार्ता के दौरान सैनिकों को पीछे हटाने और अप्रैल से पहले की स्थिति बहाल करने के विशेष प्रस्ताव को अंतिम रूप दिया गया। सूत्रों ने बताया कि भारतीय सेना और चीन की सेना (पीएलए) कोर कमांडर स्तर पर होने वाली अगली वार्ता में समझौता पर पहुंचने की उम्मीद कर रही है। सैन्य स्तर पर नौवें दौर की वार्ता अगले कुछ दिनों में होने की संभावना है। पूर्वी लद्दाख में विभिन्न पर्वतीय क्षेत्रों में भारतीय सेना के करीब 50,000 जवान तैनात हैं क्योंकि गतिरोध सुलझाने के लिए दोनों पक्षों के बीच हुई वार्ता के अब तक ठोस परिणाम नहीं निकल सके हैं।

अधिकारियों के मुताबिक चीन ने भी इतने ही जवान तैनात किए हैं। दोनों पक्षों के बीच मई की शुरुआत में गतिरोध आरंभ हुआ था। सूत्रों ने बताया कि समझौता होने पर पहले कदम के तौर पर तीन दिनों के भीतर दोनों पक्ष टैंक, बड़े हथियारों, बख्तरबंद वाहनों को एलएसी के पास गतिरोध वाले स्थानों से पीछे के बेस में ले जाएंगे। दूसरे के कदम के तौर पर पीएलए के सैनिक पैंगोंग झील के उत्तरी किनारे पर फिंगर चार के अपने मौजूदा स्थान से फिंगर आठ क्षेत्र में चले जाएंगे जबकि भारतीय सैनिक धान सिंह थापा चौकी के करीब तैनात होंगे। उन्होंने बताया कि सेनाओं के बीच बनी सहमति के तहत व्यापक रूप से तीन दिनों में हर दिन करीब 30 प्रतिशत सैनिकों की वापसी होगी। तीसरे चरण में पैंगोग झील के दक्षिणी किनारे पर रेजांग ला, मुखपारी और मगर पहाड़ी जैसे क्षेत्रों से सैनिक पीछे हटेंगे। भारतीय सैनिकों ने पैंगोग झील के दक्षिणी किनारे के आसपास रणनीतिक लिहाज से महत्वपूर्ण मुखपारी, रेजांग ला और मगर पहाड़ी जैसे क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया है। एक उच्चस्तरीय सूत्र ने बताया, ''ये सब प्रस्ताव है। समझौते पर अभी दस्तखत नहीं हुआ है।'' सूत्र ने कहा कि सैनिकों के पीछे हटने की प्रक्रिया के अंतिम चरण में दोनों पक्ष विस्तृत सत्यापन करेंगे जिसके बाद सामान्य गश्त बहाल होने की उम्मीद है। पीएलए के साथ कोर कमांडर स्तर पर आठवें दौर की वार्ता के पहले शीर्ष सैन्य अधिकारियों ने सैनिकों के पीछे हटने और पूर्वी लद्दाख में तनाव घटाने के लिए प्रस्तावों पर विचार विमर्श किया था। 'फिंगर इलाके' में सैनिकों के पीछे हटने के प्रस्ताव का मतलब होगा कि गतिरोध के समाधान तक फिंगर चार और आठ वाले इलाके के बीच गश्त की इजाजत नहीं होगी। थल सेना प्रमुख जनरल एम एम नरवणे ने मंगलवार को कहा कि उन्हें उम्मीद है कि भारतीय और चीनी सेना पूर्वी लद्दाख में सैनिकों के पीछे हटने और तनाव घटाने के संबंध में समझौते पर पहुंचेंगे। सैन्य स्तर की अंतिम दौर की वार्ता के बाद दोनों पक्षों ने इसे ''ठोस, गहरा और रचनात्मक' बताया था।

भाषणों में धुलाई करने वाले केन्द्रीय परिवहन मंत्री अब करेंगे अफसरों की धुलाई?

32 करोड़ का और चूना लगेगा आम जनता को

पहले भी पीएपी फ्लाईओवर पर करोड़ों रुपये हो चुके खराब

जालंधर ब्रीज की विशेष रिपोर्ट

भारत देश में जिस प्रकार से सड़कों का जाल बिछाया जा रहा है ऐसे लगता है देश में सिर्फ एक ही विभाग काम कर रहा है जो की परिवहन विभाग परन्तु इस विभाग के कुछ मेहनती और कर्मठ अफसरों ने इस विभाग को बुलदियों पर पहुंचाने का काम किया पर वहीं पर कुछ भ्रष्ट और नालायक अफसरों ने इस विभाग में दीमक का काम किया इस बात को पिछले लम्बे अरसे से इनकी कार्यशैली के बारे में अपने पिछले कई अंको में जालंधर ब्रीज आम जनता को परिचित करवा चुका है परन्तु इस बात को मुहर लगाने का काम विभाग के केन्द्रीय परिवहन मंत्री ने अपने पिछले दिनों में दिए भाषण में पुष्टि कर दी है की विभाग में कुछ ऐसे अफसर चिपक कर बैठे है जो विभाग के ठेकेदारों को आर्बिट्रेशन में करोड़ों रूपये का लाभ पहुंचा रहे है यह सब बातें उन्होंने तब की

नैशनल हाईवे विभाग

लंबा पिंड चौक और पठानकोट चौक फ्लाईओवर को भी फोर लेन से आठ लेन या सिक्स लेन करना पड़ेगा फिर इस समस्या से निज़ात मिल सकती है

जब वह अपने ही विभाग के दफ्तर के उद्घाटन को 10 साल बाद होने पर गुस्से में दिखे अपने भाषण में उन्होंने आम जनता से माफी मांगने की कोशिश की और इन जिम्मेवार अफसरों की खूब फजीहत की और अपने उच्चाधिकारियों को निर्देश दिया की इस पर किताब लिखे और उन नालायक अफसरों की तस्वीरों को लगाए ताकि आने वाली पीढ़ी इन पर केस स्टडी करे। इन अफसरों ने देश को पीछे ले जाने का काम किया है और साथ ही कहा की अब अफसरों की धुलाई का समय आ गया अब देखना होगा की आने वाले दिनों में जालंधर के पीएपी फ्लाईओवर के गलत निर्माण करने वाले अफसरों की धुलाई कर पाएंगे जिनकी वजह से जनता के खून पसीने की कमाई से दिए हुए टैक्स में से 32 करोड़ के नए टेंडर को लगाकर नई ठेका कंपनी को दिया जायेगा और समय की बर्बादी के साथ और लोगों को तड़फाया जायेगा क्या जिलाधीश इसकी रिकवरी इन जिम्मेवार अफसरों से करवाने के लिए विभाग को लिखेंगे या पिछले अफसरों की तरह नैशनल हाईवे के अफसरों के साथ दोस्ताना संबंध बनाकर रखेंगे परन्तु इस रैंप के नए निर्माण और इस फ्लाईओवर को चौड़ा करने के बावजूद यहाँ ट्रैफिक की समस्या रहेगी इस के बारे में जालंधर ब्रीज द्वारा पिछले अंकों में लंबा पिंड और पठानकोट चौंक के फ्लाईओवर का फोर लेन होना क्यूंकि जब पीछे से ट्रैफिक आठ लेन से तेज़ी से आगे बढ़ेगा तो आगे फोर लैनिंग होने के कारण वहां जाम लगेगा और अगर उस फ्लाईओवर पर कोई गाड़ी खराब या दुर्घटना ग्रस्त हो गई तो फ्लाईओवर के ऊपर वाहनों के लिए सिर्फ सिंगल लेन रह जाएगी इसको जालंधर ब्रीज द्वारा लिखित में डिप्टी कमिश्नर और पुलिस कमिश्नर के संज्ञान में पहले से ही ला दिया गया था और उसको ध्यान में रखने के लिए डिप्टी कमिश्नर कार्यालय द्वारा लिखित में प्रोजेक्ट डायरेक्टर को पत्र जारी किया था परन्तु यह सब कागज़ों में ही दिख रहा है और फिर पैसे को बर्बाद करने के लिए फिर से तैयारी की जा रही है।

विकास की विजय

बिहार के विधानसभा चुनाव के साथ-साथ 11 राज्यों की 56 विधानसभा सीटों के परिणाम बता रहे हैं कि देश की जनता ने एक बार फिर तमाम प्रकार के प्रचार-अपप्रचार के झांसे में न पड़ते हुए विकास के नाम पर मतदान किया। 2014 के बाद से देश में 'विकास' चुनावी मुद्दा बनने लगा है। विभिन्न राजनीतिक दल, जो कभी जाति, संप्रदाय और भावनात्मक मुद्दों पर चुनाव लड़ते थे, अब विकास के मुद्दों को प्रमुखता से उठाते हैं। देश के नागरिकों की राजनैतिक चेतना में वृद्धि हुई है। अब वे राजनीतिक विमर्श को लेकर गंभीर और सजग रहते हैं। देश में चल रहे राजनैतिक विमर्श का नीर-क्षीर आकलन करते हैं और उसके बाद ही मतदान के रूप में जनादेश देते हैं। बहरहाल, बिहार विधानसभा चुनाव के साथ मध्यप्रदेश विधानसभा के उपचुनाव के परिणाम सबसे महत्वपूर्ण हैं। मध्यप्रदेश में 2018 में विधानसभा के चुनाव हुए थे, जिसमें किसी भी राजनीतिक दल को पूर्ण बहुमत नहीं मिला था। कांग्रेस ने जोड़-तोड़ कर बसपा, सपा और निर्दलीय विधायकों को साथ लेकर सरकार बना ली थी।

राजनीतिक दल, जो कभी जाति, संप्रदाय और भावनात्मक मुद्दों पर चुनाव लड़ते थे, अब विकास के मुद्दों को प्रमुखता से उठाते हैं। देश के नागरिकों की राजनैतिक चेतना में वृद्धि हुई है। अब वे राजनीतिक विमर्श को लेकर गंभीर और सजग रहते हैं। देश में चल रहे राजनैतिक विमर्श का नीर-क्षीर आकलन करते हैं और उसके बाद ही मतदान के रूप में जनादेश देते हैं। बहरहाल, बिहार विधानसभा चुनाव के साथ मध्यप्रदेश विधानसभा के उपचुनाव के परिणाम सबसे महत्वपूर्ण हैं।

हालांकि, माना जा रहा था कि यदि भाजपा चाहती तो उसी समय इसी तरीके से सरकार बना सकती थी। लेकिन, भाजपा ने उस समय सरकार न बनाकर अच्छा ही निर्णय लिया। इससे भाजपा की 15 साल की सरकार के प्रति जो थोड़ा बहुत आक्रोश बना था, उसे कांग्रेस की 15 महीने की सरकार ने दूर कर दिया। जनता को भी एक बार फिर भाजपा और कांग्रेस सरकार का अंतर समझ आ गया। प्रदेश में 'बदलाव' की बातें करके सत्ता में आई कांग्रेस की लंगड़ी सरकार ने 'बदले की राजनीति' की पटकथा लिखना प्रारंभ कर दिया। शासकीय कर्मचारियों एवं संस्थाओं पर कांग्रेस का संगठन हमलावर हो गया। तबादला उद्योग प्रारंभ हो गया। भ्रष्टाचार की आहट सुनाई देने लगी। कुल मिलाकर लंबे समय बाद सत्ता में वापसी करने वाली कांग्रेस सरकार पूरी तरह दिशाभ्रमित नजर आई। घोषणा-पत्र में किसानों और युवाओं से किए गए वायदों को कांग्रेस सरकार ने तय समय में पूरा नहीं किया। जिसके परिणाम यह रहे कि- जनता के बीच कांग्रेस सरकार का विरोध प्रारंभ हो गया, सरकार एवं पार्टी में अंतर्कलह चरम पर पहुंच गया और सरकार ध्वस्त हो गई। मध्यप्रदेश की विधानसभा के यह उपचुनाव इसलिए भी याद किए जाएंगे क्योंकि कांग्रेस सरकार गिरने के बाद से मतदान तक राजनीतिक बयानों में एक कड़वाहट, कठोरता और घृणा सुनाई दी है। कांग्रेस की ओर से वरिष्ठ नेता ज्योतिरादित्य सिंधिया के प्रति जिस प्रकार की बयानबाजी की गई, बाद में कमलनाथ की ओर से इमरती देवी और फूल सिंह बरैया की ओर से महिलाओं के प्रति जिस तरह की सोच सामने आई, वह बेहद निंदनीय रही। किसान परिवार से आने वाले मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को भूखा-नंगा जैसे अपशब्दों से संबोधित करना भी कांग्रेस को ले डूबा। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह की सक्रियता ने भी जनता में एक भय उत्पन्न किया। दिग्विजय सिंह का कार्यकाल अभी तक मध्यप्रदेश की जनता को भयाक्रांत करता है। बहरहाल, मध्यप्रदेश सहित अन्य राज्यों के उपचुनावों और बिहार विधानसभा के चुनाव परिणामों को केंद्र की नरेन्द्र मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल की नीतियों, उपलब्धियों पर जनमत संग्रह के तौर पर देखा जा सकता है। इन परिणामों के आधार पर आकलन किया जा सकता है कि कोविड-19 वायरस के कारण उत्पन्न महामारी को रोकने के प्रयासों, नये किसान कानूनों और भारत-चीन तनाव पर देश की जनता ने मोदी सरकार के कठोर रुख के प्रति विश्वास जताया है।

दृष्टिकोण

धर्म के प्रति जागृति है ईश्वर को पाने की उत्कंठा

स्वामी विवेकानंद

पूजा-पाठ और अनुष्ठान आदि से तब तक कुछ नहीं होगा, जब तक हमारे अंदर ईश्वर को पाने की तीव्र लालसा नहीं उत्पन्न होगी।

एक शिष्य गुरु के पास गया और बोला, गुरुदेव, मुझे धर्म चाहिए। गुरुजी कुछ नहीं बोले, केवल मुस्कुरा दिए। एक दिन बहुत गर्मी थी। गुरु ने युवक से कहा, चलो नदी में स्नान कर आएं। वे नदी में गए। युवक के साथ गुरुजी नदी में उतरे। गुरुजी ने बलपूर्वक उस युवक का सिर कुछ समय तक पानी के अंदर ही दबाकर रखा और जब कुछ देर तक वह युवक पानी के भीतर छटपटाने लगा, तब छोड़ दिया। गुरुजी ने पूछा, पानी के अंदर तुम्हें सबसे अधिक आवश्यकता किस बात की थी? शिष्य ने उत्तर दिया, सांस की। गुरुजी बोले, क्या तुम्हें इतनी ही आवश्यकता ईश्वर की है? यदि है तो तुम उसे एक क्षण में पा जाओगे। जब तक तुममें वही पिपासा, वही तीव्र व्याकुलता, वही लालसा नहीं होती, तब तक तुम अपनी बुद्धि, पुस्तकों या अनुष्ठानों के सहारे कितना भी खटपट करो, तुम्हें धर्म की प्राप्ति नहीं होगी। जब तक तुममें धर्म पिपासा जाग्रत नहीं होती, तब तक तुममें और नास्तिक में बस इतना अंतर होगा कि नास्तिक निष्कपट है और तुममें वह गुण भी नहीं है।

क्या सब मनुष्यों में यथार्थ में ऐसा विश्वास है कि सुख की खान, आनंदकंद स्वयं परमेश्वर यहां हैं और ऐसा विश्वास होते हुए भी ये लोग ईश्वर की प्राप्ति के लिए प्रयत्न न करके संसार में उसी तरह व्यवहार करेंगे, जैसा कि अभी कर रहे हैं।

ज्यों ही मनुष्य विश्वास करना आरंभ करता है कि ईश्वर है, त्योंही वह ईश्वर को प्राप्त करने की प्रबल लालसा से पागल हो जाता है। यही पागलपन धर्म के प्रति जागृति कहलाता है। यहां तक पहुंचने के लिए अनुष्ठान, प्रार्थना, तीर्थयात्रा, शास्त्राध्ययन, आरती आदि सब प्रारंभिक तैयारियां हैं।

अजब-गजब

60 साल बाद लौटी किताब !

आप भी कई बार अपने दोस्तों को किताब देते होंगे और आपकी यह शिकायत होती होगी कि वे उसे लौटाना भूल जाते हैं। लेकिन ब्रिटेन की मिडल्सब्रो सेंट्रल लाइब्रेरी में एक ऐसी घटना घटी कि सभी हैरान रह गए। बताते हैं कि एक दिन वहां के कर्मचारी को हाल में रिटर्न बॉक्स में देय तिथि के 60 साल बाद कविता की एक किताब (द बरिड स्ट्रीम-ज्योफ्री फेबर) मिली। लाइब्रेरी वाले खुश हैं कि वह किताब वापस उनके स्टॉक में आ गई है। वैसे, खबरों के अनुसार, अगर कोविड-19 का दौर नहीं होता, तो लौटाने वाले को 650 पाउंड का जुर्माना देना पड़ सकता था। इससे पहले कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी की लाइब्रेरी से भी किसी स्टूडेंट ने किताब ली थी और उसे 60 साल बाद लाइब्रेरी को वापस किया था।

बिहार में वर्तमान विधान सभा चुनावों के बाद सत्ता परिवर्तन के सारे अनुमान गलत साबित हो गए

मोदी की लोकप्रियता ने राजग को फिर दिलाई सत्ता

कृष्णमोहन झा

बिहार में वर्तमान विधान सभा चुनावों के बाद सत्ता परिवर्तन के सारे अनुमान गलत साबित हो गए। मंगलवार को मतगणना के प्रारंभिक रुझानों में यद्यपि राजद नीत महागठबंधन को बढत मिल रही थी परंतु यह बढत ज्यादा देर तक कायम नहीं रह सकी और भाजपा तथा जदयू के गठबंधन ने महागठबंधन पर बढ़त बनाकर तेजस्वी यादव की सारी उम्मीदों पर पानी फेर दिया। भाजपा ने इन चुनावों में अपनी सहयोगी जदयू से अधिक सीटें हासिल की हैं जिनसे इन धारणाओं को बल मिलना स्वाभाविक है कि मुख्यमंत्री नीतिश कुमार की सुशासन बाबू के रूप में लोकप्रिय छवि कुछ हद तक धूमिल हुई है। दूसरी ओर भाजपा को जो विजय इन चुनावों में मिली है जो यह साबित करती है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की करिश्माई लोकप्रियता का जादू अभी भी बरकरार है। गौरतलब है कि प्रधानमंत्री मोदी ने इन चुनावों में भाजपा के पक्ष में धुंआधार रैलियों को संबोधित किया था और उनकी रैलियों में जुटने वाली अपार भीड से यह संदेश मिलने लगा था कि भाजपा अब जदयू के साथ अपने गठबंधन में बडे भाई का दर्जा पाने की अधिकारी बन चुकी है यद्यपि भाजपा यह कह चुकी है कि राज्य में राजग की पुन: सत्ता में वापसी होने पर नीतिश ही मुख्यमंत्री होंगे। राजनीतिक पंडितों के अनुसार भाजपा जदयू से अधिक सीटें मिलने के आधार पर अभी मुख्यमंत्री पद के लिए दावा पेश नहीं करेगी। वैसे अभी इस संभावना से भी इंकार नहीं किया जा सकता आगे चलकर नीतिश कुमार स्वयं ही मुख्यमंत्री की भाजपा के लिए खाली कर दें। इन चुनावों में सत्तारूढ राजग ने सत्ता में बने रहने और विपक्षी महागठबंधन ने सत्ता हासिल करने के लिए अपनी पूरी ताकत झोंक दी थी । सीटों के बटवारे में भाजपा और जदयू के हिस्से में लगभग बराबर सीटों पर समझौता हुआ था 7 भाजपा ने अपने हिस्से की कुछ सीटें नवगठित व्ही आई पी पार्टी के छोडी थी जबकि नीतिशकुमार अपनी पार्टी को मिली सीटों में से कुछ सीटों पर जीतनराम मांझी की हम पार्टी को एडजस्ट किया था । महागठबंधन में राजद ही मुख्य घटक था और कांग्रेस तथा साम्यवादी दल उसमें सहयोगी दलों के रूप में शामिल थीं। चिराग पासवान की लोकजनशक्ति पार्टी इस बार राजग से अलग होकर चुनाव मैदान में उतरी जिसने अपने उम्मीदवार केवल उन्हीं चुनाव क्षेत्रों में खडे किए थे जो सीटें भाजपा -जदयू के बीच हुए चुनावी समझौते में जदयू के हिस्से में आई थीं। इसका नुकसान भी जदयू को कुछ सीटों पर उठाना पड़ा। इन चुनावों में भाजपा के पक्ष में समर्थन जुटाने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, भाजपाध्यक्ष जे पी नड्डा सहित अनेक वरिष्ठ भाजपा नेताओं ने चुनाव रैलियों को संबोधित किया जिनमें जुटने वाली भारी भीड यह संकेत दे रही थी कि राज्य की जनता में जदयू से अधिक भाजपा के प्रति आकर्षण है। यह इस बात का संकेत था कि जनता प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार द्वारा प्रारंभ जन कल्याण योजनाओं से प्रभावित है और वह राज्य में भाजपा और जदयू के गठबंधन को ही सत्ता में देखना चाहती है। जदयू के पास मुख्यमंत्री नीतिश कुमार के अलावा कोई बड़ा चेहरा नहीं था। नीतिश कुमार की रैलियों में शामिल पार्टी कार्यकर्ताओं में इस बार कोई उत्साह दिखाई न देने से यह संकेत मिलने लगे थे कि उन्हें इन चुनावों में नीतिश कुमार का जादू पहले की तरह न चलने की हकीकत का अहसास चुनावों के पहले ही हो चुका था। पूरे चुनाव अभियान के दौरान नीतिश थके हारे नेता के रूप में नजर आए और तीसरे चरण के मतदान के पहले अपनी आखरी रैली में नीतिश कुमार ने वर्तमान चुनावों को अपना आखरी चुनाव बताकर मतदाताओं की सहानुभूति बटोरने के लिए इमोशनल कार्ड भी चल दिया यद्यपि बाद में वे अपने बयान से पलट भी गए। बिहार में भाजपा के साथ अपनी पार्टी के गठबंधन में हमेशा बडे भाई की भूमिका निभाने वाले नीतिश कुमार इन चुनावों में अपनी वह हैसियत बरकरार रखने में सफल नहीं हो पाए। चुनावी सभाओं में उनके खिलाफ नारेबाजी भी देखने को मिली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इन चुनावों मे भाजपा के पक्ष में धुंआधार रैलियों को संबोधित किया और वे जनता को यह समझाने में सफल रहे कि अगर राज्य में राजद को सत्ता में वापसी करने में सफलता मिल गई तो राज्य में जंगलराज का दौर फिर लौटने की आशंका से इंकार नहीं किया जा सकता। युवाओं को दस लाख नौकरी देने का जो वादा राजद के मुखिया तेजस्वी यादव ने चुनावों में किया था वह युवा मतदाताओं को इतना सम्मोहित नहीं कर पाया कि महा गठबंधन सत्ता हासिल करने का सुनहरा स्वप्न साकार करने में सफलता मिलती। तेजस्वी यादव की सभाओं में जुटने वाली भारी भीड देखकर यह अनुमान लगने शुरुहो गए थे कि इन चुनावों के बाद राज्य में सत्ता परिवर्तन लगभग तय होना है परंतु चुनाव परिणामों ने अनेक समाचार चैनलों के एक्जिट पोल के परिणामों को गलत साबित कर दिया। तेजस्वी यादव की सभाओं में जुटने वाली भारी भीड राजद के वोटों में तब्दील हो जाती तो तेजस्वी यादव राज्य का सबसे युवा मुख्यमंत्री होने का गौरव हासिल हासिल कर लेते परंतु अब महागठबंधन के सामने अब यही विकल्प बचा है कि वह फिर से विधानसभा के अंदर विपक्ष की भूमिका स्वीकार कर ले । बिहार में जब यह तय हो चुका है कि राज्य में अगले पांच सालों तक भाजपा और जदयू के पास ही सत्ता की बागडोर रहेगी तब यह भी उत्सुकता का विषय है कि अब चिराग पासवान की लोकजनशक्ति पार्टी की क्या भूमिका होगी। चिराग पासवान ने तो चुनाव प्रचार के दौरान यहां तक कह दिया था कि उनकी पार्टी सत्ता में आई तो नीतिश कुमार के कार्यकाल में हुए भ्रष्टाचार की जांच कराएगी और उन्हें जेल भेजने में भी कोई संकोच नहीं करेगी । चिराग पासवान ने एकाधिक बार यह भी कहा कि उन्हें भाजपा का समर्थन प्राप्त है इसलिए उनने चुनाव में भाजपा उम्मीदवारों के खिलाफ अपनी पार्टी के उम्मीदवार खड़े नहीं किए। अब जबभाजपा और जदयू ने मिलकर विधान सभा में बहुमत हासिल कर लिया है तब नीतिश कुमार के पुन:मुख्यमंत्री बनने की राह में अवरोध पैदा करने की सामर्थ्य उनमें नहीं है। केंद्र में राजग में रहने में उन्हें कोई आपत्ति नहीं है इसलिए केंद्र में ही वे अपने संभावनाएं खोज सकते हैं । बिहार विधानसभा के चुनाव जितने नीतिश कुमार के लिए महत्वपूर्ण उससे अधिक महत्वपूर्ण भाजपा के लिए थे। भाजपा इन चुनावों को अगले वर्ष पश्चिम बंगाल में होने वाले विधान सभा चुनावों से जोड़कर देख रही थी इसलिए जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बिहार में भाजपा के चुनाव अभियान की बागडोर संभाले हुए थे तब केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह पं.बंगाल में जाकर पार्टी के प्रचार अभियान में व्यस्त हो गए। बिहार की जीत का उल्लास प. बंगाल में भाजपा के उत्साह को द्विगुणित करेगा। बिहार में भाजपा अब जदयू को जिस तरह जुड़वां भाई बता रही है वह इस बात का संकेत है कि वह नीतिश को अब बडे भाई जैसा महत्व देने के लिए तैयार नहीं है। नीतिश कुमार के ही मुख्यमंत्री बनने की संभावनाएं भले ही प्रबल हों परंतु भाजपा अब सत्ता में अपना वर्चस्व कायम करना चाहेगी। दरअसल इस बार नीतिश कुमार का भारी विरोध होने के बावजूद अगर वे मुख्यमंत्री बनने में सफल होते हैं तो उसमें भाजपा का योगदान महत्वपूर्ण माना जाएगा इसलिए अगर भाजपा में भी राज्य के मुख्यमंत्री पद की महत्वाकांक्षा जाग उठे तो वह आश्चर्य की बात नहीं होगी।

"प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की करिश्माई लोकप्रियता का जादू अभी भी बरकरार है। गौरतलब है कि प्रधानमंत्री मोदी ने इन चुनावों में भाजपा के पक्ष में धुंआधार रैलियों को संबोधित किया था और उनकी रैलियों में जुटने वाली अपार भीड से यह संदेश मिलने लगा था कि भाजपा अब जदयू के साथ अपने गठबंधन में बडे भाई का दर्जा पाने की अधिकारी बन चुकी है यद्यपि भाजपा यह कह चुकी है कि राज्य में राजग की पुनः सत्ता में वापसी होने पर नीतिश ही मुख्यमंत्री होंगे।"

संदर्भ

जीत खुशियां लेकिन चुनौतियों का अंबार

मध्यप्रदेश : शिवराज की सत्ता बरकरार

रमेश शर्मा

मध्यप्रदेश में 28 विधानसभा सीटों पर उपचुनाव परिणाम आ गये इसमें सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी ने 20 सीटें जीतकर लगभग सबके अनुमानों को पीछे छोड़ दिया है। कांग्रेस को केवल सात सीटों पर ही संतोष करना पड़ा जबकि एक सीट मुरैना पर बहुजन समाज पार्टी ने अपनी जीत दर्ज की। उपचुनावों वाली इन 28 सीटों में 25 सीटें वे थीं जो विधायक कांग्रेस छोड़ कर भारतीय जनता पार्टी में आये थे। शेष तीन सीट विधायकों के निधन के कारण रिक्त हुई थीं। 2018 में संपन्न विधानसभा चुनावों में इन 28 में सीटों में से भाजपा केवल एक सीट आगर मालवा में जीती थी। शेष सभी 27 सीटों पर कांग्रेस विजयी हुई थी। लेकिन 25 विधायकों के दल बदल और दो विधायकों के निधन के कारण उसे भारी नुकसान हुआ और सत्ता उसके हाथ से चली गई । इसका लाभ भाजपा ने उठाया और पन्द्रह महीने के अंतराल के बाद वह पुन: सत्ता में काबिज हो गयी। इन उपचुनावों के भाजपा को अपनी सत्ता बनाये रखने के लिये केवल नौ सीटों की आवश्यकता थी। जबकि कांग्रेस को दोबारा सत्ता में आने के लिये सभी 28 सीटों की जरूरत थी। यदि वह बाहर से कुछ विधायकों जुटा लेती तब भी उसका काम तेईस चौबीस सीटों से कम में न चलता । जो एक कठिन लक्ष्य था। दूसरी ओर भाजपा को आसान आठ नौ सीटों का आसान लक्ष्य प्राप्त कर लेने का अनुमान लगभग सभी सर्वे में आया था। अब जो परिणाम आये उनमें भाजपा ने चुनाव पूर्व के लगभग सभी अनुमानों को पीछे छोड़ दिया । यह माना जा रहा था कि भाजपा लगभग 15 या 16 सीटों पर सफलता लेकर अपनी सरकार को बनाये रखेगी। लेकिन इन अनुमानों से भाजपा ने लगभग चार सीटें अधिक लेकर कांग्रेस को भी चौंका दिया। इस जीत से निसंदेह भाजपा में भारी खुशी का माहौल है। अब विधानसभा में भाजपा की सदस्य संख्या बढ़कर 127 हो गयी। अब भाजपा को बाहर किसी के भी समर्थन की आवश्यकता नहीं है । उसका आंतरिक वातावरण भारी प्रसन्नता से भर गया है। इस जीत की भाजपा के सामने खुशियां ला दी हैं।

दो साल पहले सत्ता चले जाने का दर्द अब हवा हो गया है । नये जोश के साथ अब एक मजबूत सत्ता का संचालन करेगी। लेकिन अब सत्ता की मजबूती के साथ उसके सामने समस्याओं का अंबार है । यूँ तो चुनौतियां असीम हैं फिरभी तीन ऐसी बड़ी चुनौतियां हैं जिनका समाधान खोजे सफलता नहीं मिलेगी । इनमें सरकार को चलाने की, संगठन में समन्वय बनाने की और कांग्रेस अब आक्रामक रुख का यथेष्ट सामना करने की है। सबसे पहले सरकार चलाने में जो समस्या आने वालीं हैं वह आर्थिक संकट की हैं। सरकार के पास पैसा बिल्कुल नहीं है जबकि जन अपेक्षाओं का अंबार है। प्रदेश की आर्थिक कैसी है उसका अनुमान केवल इस बात से ही लगाया जा सकता है कि शिवराज सरकार ने अपने वर्तमान सात महीने के कार्यालय में दस हजार करोड़ का ऋण उठाया है। इस तरह प्रदेश पर दो लाख करोड़ से अधिक का ऋण हो गया। इसके साथ इस सरकार से जन अपेक्षाएं बहुत हैं। जो लोग कांग्रेस से आये हैं उनके क्षेत्रों में भी नये कामों का दबाव अलग रहेगा।

नये कामों के लिये सरकार की अपनी घोषणाएं भी हैं। अब इन नये कामों को आरंभ करने की बात तो दूर नियमित कामों को संचालित करने के लिये भी पर्याप्त धन नहीं है। नये काम आरंभ करना तो दूर। सरकारी तंत्र को संचालित करने के लिये भी पर्याप्त धन नहीं है। अब यह सब कैसे होगा इसका उत्तर आज किसी के पास नहीं हैं । दूसरी समस्या भाजपा संगठन में समन्वय बिठाकर आगे बढ़ने की है। भाजपा में एक बड़ा समूह कांग्रेस से आया है इसमें अब इन बीस नये विधायकों के उन विधायकों को कोई सम्मान जनक दायित्व या संगठन में महत्व देना भी एक चुनौती है। इन पच्चीस में से सत्रह अठारह स्थान ऐसे हैं जहां भाजपा के अपने कद्दावर नेता रहे हैं ।सांची, सुवासरा, नेपानगर, हाट पिपल्या ग्वालियर पूर्व गोहद आदि सीटें हैं । यहां इन सब के बीच समन्वय बिठाकर आगे बढ़ने की चुनौती होगी। तीसरी महत्वपूर्ण चुनौती कांग्रेस के आक्रामक रुक की रहेगी। कांग्रेस भले सत्ता से बाहर है लेकिन विधानसभा में उसकी सदस्य संख्या अब 95 होगी। इससे पहले कांग्रेस यद्यपि पन्द्रह वर्ष विपक्ष में रही लेकिन विपक्ष में रहकर कांग्रेस कोई बड़ा आंदोलन खड़ा न कर सकी। सदन के भीतर और बाहर आंदोलन तो हुए पर कोई प्रभावकारी आंदोलन न हो सका। लेकिन इस बार कांग्रेस के तेवर तीखे रहेंगे जो इन उपचुनावों में भी देखने को मिला। कांग्रेस विधानसभा के भीतर भी आक्रामक रहेगी और बाहर भी । बहुत संभव है कि किसान ऋण मुक्ति और नौजवानों को रोजगार के मुद्दे पर कोई बड़ा आंदोलन खड़ा करे। भाजपा और उसकी सरकार के सामने जीत की और पर्याप्त बहुमत प्राप्त होने की खुशी के साथ चुनौतियां साथ आ रहीं हैं । हालांकि भाजपा के पास नेतृत्व सक्षम है। मुख्यमंत्री के रूप में शिवराज सिंह चौहान, प्रदेशाध्यक्ष के रूप में विष्णुदत्त शर्मा और संगठन प्रभारी सुहास भगत मानों त्रिशक्ति के रूप में उसके पास हैं। केन्द्र में अनुकूल सरकार के साथ तालमेल भी बहुत अच्छा है जो यह संकेत तो देता है कि भाजपा संगठन और सरकार दोनों इन समस्याओं के समाधान का मार्ग निकाल लेंगे। फिर भी भविष्य की डगर कठिन तो है ।

"इन उपचुनावों के भाजपा को अपनी सत्ता बनाये रखने के लिये केवल नौ सीटों की आवश्यकता थी। जबकि कांग्रेस को दोबारा सत्ता में आने के लिये सभी 28 सीटों की जरूरत थी। यदि वह बाहर से कुछ विधायकों जुटा लेती तब भी उसका काम तेईस चौबीस सीटों से कम में न चलता । जो एक कठिन लक्ष्य था। अब जो परिणाम आये उनमें भाजपा ने चुनाव पूर्व के लगभग सभी अनुमानों को पीछे छोड़ दिया ।अनुमानों से भाजपा ने लगभग चार सीटें अधिक लेकर कांग्रेस को भी चौंका दिया।"

प्रेरक प्रसंग

इस महान कवि के स्वाभिमान के सामने कम पड़ गई राजा की संपत्ति

महाकवि भूषण छत्रपति शिवाजी के दरबारी कवि थे। एक बार शिवाजी के दरबार में दूसरे राज्य के एक राजा आए। वे शिवाजी की प्रशंसा में भूषण की कविता सुनकर भाव-विभोर हो गए। भूषण से वे बोले, 'आप इसी तरह हमारी प्रशंसा में भी कुछ लिखिए।' भूषण ने उनका आग्रह स्वीकार कर लिया। कुछ दिन बाद वे उस राजा की प्रशंसा में एक काव्यग्रंथ लिखकर ले गए और दरबार में उन्होंने उसके कुछ अंश पढ़े। कविता सुनकर दरबार में सब वाह-वाह कर उठे।

प्रसन्न होकर राजा ने महाकवि भूषण को तीन लाख स्वर्ण मुद्राएं देते हुए कहा, 'एक काव्यग्रंथ के लिए आपको इतनी ज्यादा स्वर्ण मुद्राएं देने वाला इस देश में दूसरा कोई राजा नहीं मिलेगा।' भूषण को यह सुनकर आघात लगा। उन्होंने सोचा कि राजा को अपनी संपत्ति का अहंकार हो गया है, इसलिए इसे कवि के स्वाभिमान की जरा भी परवाह नहीं है। भूषण यह सोचते हुए कुछ देर मौन रहे। राजा ने समझा कि शायद भूषण को स्वर्ण मुद्राएं कम लग रही हैं। वह बोला, 'हम आपके काव्यपाठ से बहुत खुश हैं। अगर आपको इतनी मुद्राएं कम लगती हैं, तो हम आपको और भी मुद्राएं दे सकते हैं।' भूषण ने स्वर्ण मुद्राओं से भरी थैली राजा को लौटाते हुए कहा, 'राजन, इतनी बड़ी कीमत को वापस करने वाला कवि भी इस देश में आपको खोजने पर नहीं मिलेगा। आपने कवि की वाणी का सम्मान नहीं किया, बल्कि उसे पैसों से तौलकर आपने कवि और उसकी कविता का अपमान किया है। इसलिए आपकी यह स्वर्ण मुद्राएं मुझे मिट्टी समान लग रही हैं।' उसके बाद राजा ने बहुत अनुनय-विनय की, लेकिन भूषण ने स्वर्ण मुद्राएं लेने से इंकार कर दिया और वे शिवाजी के पास वापस लौट गए। भूषण का स्वाभिमान देखकर राजा का अहंकार चूर-चूर हो गया।

नागरिक बोध

आतंकवाद के विरुद्ध एकजुट होकर लड़ा जाए

फ्रांस व ऑस्ट्रिया में आतंकी घटना के बाद पुन: महसूस किया जा रहा है कि आतंकवाद के विरुद्ध एकजुट होकर लड़ा जाए । भारत तो वर्षों से आतंक का दंश सह रहा है। भारत पिछले कई वर्षों से सभी देशों से अपील करता आ रहा है कि आतंक के विरुद्ध सभी देश एकजुट होकर प्रहार करें। लेकिन विडंबना की बात है कि थोड़े दिनों बाद वही पुरानी डफली पुराना राग शुरू हो जाता है। जिसके पैरों में आग लगती है वह उछल कूद करता है तो दूसरों को तमाशा लगता है, लेकिन जब स्वयं के पैरों में आग लगती है तो महसूस होता है कि आग क्या है ? अब तो सभी देशों को एकजुट होकर ना केवल आतंक पर प्रहार करना चाहिए, बल्कि जो देश आतंकवादियों को पाल पोष रहे हैं, उनके हितों पर भी प्राथमिकता से चोट करना होगी, तभी आतंक का कहर थमेंगा। अन्यथा सभी राष्ट्र अलग-अलग ढपली पर अलग-अलग राग अलापते रहेंगे तो निश्चित ही आतंक का दंश सबको झेलना पड़ेगा। इंसानियत को बचाने के लिए सभी देशों को एकजुट होना, यह इस समय का तकाजा है। सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या सभी राष्ट्र एक सूर में आतंक के विरुद्ध प्रहार करेंगे ?

जब तक तकलीफ सहने की तैयारी नहीं होती तब तक फायदा दिखाई दे ही नहीं सकता। फायदे की इमारत नुकसान की धूप में बनी है। चैम्पियन वह है जो तब भी उठ खड़ा हो, जब वह उठ ही न सकता हो। -जय गुरुदेवबाबा

दीपावली
लक्ष्मी देवी की आराधना का महापर्व

मेघाच्छादित आकाश जब स्वच्छ हो जाता है और नदी-तालाबों का जल निर्मल हो जाता है, धरती भी पंकमुक्त होकर दिनेश के सुकोमल धूप से अपना तन सुखाती है और धान के खेतों से लेकर वन-उपवन सब हरे भरे होते हैं। तब आती है दीपावली ! शरद की मधुर-मोहक ऋतु में दीपोत्सव कितना आह्लादकारी होता है, यह दीप जलाकर अनुभव किया जा सकता है।

वर्षाऋतु सारे भूमंडल को शुद्ध-साफ बना देती है और सूर्य के उत्ताप को शीतल बना देती है, तब शीतलता का उपहार लेकर क्रमशः शरद और शिशिर का आगमन होता है। तब आता है रोशनी का पर्व।

सर्वविदित है कि भारतवर्ष त्यौहारों, पर्व-उत्सवों और मेला-धर्म-अनुष्ठानों का देश है। यहां का प्रत्येक वर्ग-समुदाय किसी-न-किसी धर्म या सम्प्रदाय का अनुयायी है और प्रत्येक सम्प्रदाय में पर्व-उत्सव बडे उल्लास के साथ मनाये जाते हैं। चाहे सिक्खों की वैशाखी हो या मुसलमानों की ईद, जैनियों की महावीर जयंती हो अथवा बौद्धों की बुद्ध-पूर्णिमा, ये सभी पर्व रोशनी के साथ मनाये जाते हैं। बिना रोशनी के कोई पर्व-उत्सव सम्भव नहीं है। हिन्दुओं के पर्व-त्यौहार तो बिना दीपक और अग्निहोत्र के सम्पन्न ही नहीं होते। दीपक परमात्मा का निराकार रूप है।

क्यों मनाते हैं दीपावली

पौराणिक कथाओं के अनुसार वामन द्वारा बलि से भूमिदान के पश्चात् हरि के पाताल गमन पर दीपोत्सव मनाया गया था। श्रीलंका विजय पश्चात् श्रीराम के अयोध्या आगमन पर भी दीपमालिका सजायी गयी थी। इस पर्व पर महाकाली द्वारा राक्षसों का संहार किया गया था। यह लक्ष्मी की मुक्ति का भी पर्व है। कामरूप के राजा नरकासुर का वध भी इसी पर्व पर भगवान कृष्ण ने किया था और गोवर्धन पर्वत की पूजा करके नयी क्रांति का उद्घोष किया था।

यह लक्ष्मी देवी की आराधना का महापर्व है। लक्ष्मी अपने तीन रूपों में पूजी जाती है यथा स्वर्ग में लक्ष्मी, मृत्युलोक में राजलक्ष्मी एवं पाताल में नागलक्ष्मी। इन्हें हम तीनों रूप में मानव समाज में देख सकते हैं, प्रथम धनलक्ष्मी दूसरी शारीरिक-मानसिक व राज्यशक्ति के

भारत का तो यह महापर्व ही है। धनतेरस को कुबेर की पूजा के साथ प्रारंभ होकर चतुर्दशी को मृत्यु के देवता की आराधना, फिर अमावस्या को दीप-मालिका, लक्ष्मी पूजन और प्रथमा (पड़वा) को अन्नकूट-गोवर्धन पूजा, फिर पांचवें दिन भाईदूज या दोज तक पांच दिवसीय पर्व होता है।

रूप में (सत्ता) और तीसरी स्त्री के रूप में। जिसे इन तीनों प्रकार का अनुदान-वरदान प्राप्त है, वह निश्चय ही महालक्ष्मी की कृपा का फल है।

दीपावली पर्व पर लोग लक्ष्मी की आराधना करके धनवान, सत्ताधारी और सुखी गृहस्थ होने की प्रार्थना-याचना करते हैं।

रोशनी का पर्व

दीपावली रोशनी फैलाने और उजाला करने का भी पर्व है। भारत ही नहीं, इंडोनेशिया, मारिशस, सिंगापुर जैसे अनेक देश जहां हिन्दू संस्कृति का प्रभाव है, दीपावली का पर्व श्रद्धाभावना एवं उमंग के साथ मनाते हैं।

भारत का तो यह महापर्व ही है। धनतेरस को कुबेर की पूजा के साथ प्रारंभ होकर चतुर्दशी को मृत्यु के देवता की आराधना, फिर अमावस्या को दीप-मालिका, लक्ष्मी पूजन और प्रथमा (पड़वा) को अन्नकूट-गोवर्धन पूजा, फिर पांचवें दिन भाईदूज या दोज तक पांच दिवसीय पर्व होता है। कार्तिक मास की त्रयोदशी कृष्ण से कार्तिक शुक्ल द्वितीया तक यह कार्यक्रम सम्पन्न होता है।

लक्ष्मी पूजा क्यों ?

लक्ष्मी परमात्मा विष्णु की प्राणप्रिया पत्नी है और कृषि प्रधान भारतवर्ष का प्रत्येक किसान धान और अन्य अन्न-फलादि को लक्ष्मी-नारायण का स्वरूप और महाप्रसाद मानता है। वर्षा में कष्ट उठाकर कठोर श्रम द्वारा प्राप्त अन्न-धन के प्रति ऐसी भावना का होना स्वाभाविक ही है। लक्ष्मी पूजन के पीछे यही भावना दिखलाई पड़ती है।

पूजा के पीछे एक ही रहस्य है कि धन का सम्मान किया जाय। पहला, धन का उपार्जन श्रमपूर्वक, ईमानदारी से किया जाय, दूसरे उसका सदुपयोग किया जाय। धर्मशास्त्रों के अनुसार धन का एक भाग परमार्थ के लिए, दूसरा भाग अपने वृद्ध माता-पिता की सेवा में, तीसरा भाग स्वयं एवं परिवार के भरण-पोषण में तथा चौथा भाग भविष्य के लिए सुरक्षित रखना चाहिए। अपव्यय एक पाई का भी न करें। धन को जुआ, सट्टा-लाटरी एवं कालाबाजारी में लगाना नैतिक अपराध व पाप है। उपरोक्त बातें यदि लक्ष्मी पूजा करके समझ आ जायें तो अति-उत्तम हैं। इसी प्रकार दीप मालिका सजाने का तात्पर्य है कि हम अपने जीवन से अज्ञान रूपी अंधकार को ज्ञान का दीप जलाकर नष्ट करें और दूसरों को भी प्रकाश बांटें। ज्ञान और प्रेम का प्रकाश बांटकर सारे संसार का तम-ताप मिटाने का प्रयास ही दीपावली का संदेश है। गोवर्धन पूजा के पीछे रहस्य यह है कि हम गौ, कृषि, वन एवं पर्यावरण के संरक्षण-संवर्धन के प्रति जागरूक और प्रयत्नशील हों। भगवान श्रीकृष्ण ने यही कार्य किया था।

दीपावली का संदेश

दीपावली यह भी संदेश देती है कि हम अपनी बहिन-बेटियों का सम्मान करें। अपनी ही नहीं, औरों की बहिन-बेटी भी हमारे लिए लक्ष्मी माता की तरह आदरणीया हों। दीपावली की रोशनी से हम अपना घर तो रोशन करें, किन्तु किसी का घर न जलायें, किसी का दिल न जलायें। हो सके तो किसी की जिंदगी को जगमग कर दें। उसे अज्ञान-मुक्त कर दें। अक्षर ज्ञान कराकर पुण्य कमायें। किसी के बच्चे को पढा-लिखा दें तो दीपावली सच्चे अर्थों में मना ली।

दीपों का पर्व सारे संसार को यही संदेश देता है कि दीपक की तरह जलो, दूसरों को रोशनी बांटो। दीपों की थाली ही न सजायें, हम स्वयं प्रभाकर बनें।

पं. अयोध्या सिंह उपाध्याय के निम्न शब्दों को साकार करें और ज्योति को वरें। -

बना काल को कलित कांतिधर।
अमा-निशा को आलोकित कर।।
पावस-जनित कालिमाएं हर।
दमक दीप मालाओं में भर।।
घर-घर बही ज्योति की धारा.....

श्री विश्वकर्मा विश्व के भगवान

हम अपने प्राचीन ग्रंथो उपनिषद एवं पुराण आदि का अवलोकन करें तो पायेगें कि आदि काल से ही विश्वकर्मा शिल्पी अपने विशिष्ट ज्ञान एवं विज्ञान के कारण ही न मात्र मानवों अपितु देवगणों द्वारा भी पूजित और वंदित है । भगवान विश्वकर्मा के आविष्कार एवं निर्माण कोर्यों के सन्दर्भ में इन्द्रपुरी, यमपुरी, वरुणपुरी, कुबेरपुरी, पाण्डवपुरीए सुदामापुरी, शिवमण्डलपुरी आदि का निर्माण इनके द्वारा किया गया है । पुष्पक विमान का निर्माण तथा सभी देवों के भवन और उनके दैनिक उपयोगी होनेवाले वस्तुएं भी इनके द्वारा ही बनाया गया है । कर्ण का कुण्डल, विष्णु भगवान का सुदर्शन चक्र, शंकर भगवान का त्रिशुल और यमराज का कालदण्ड इत्यादि वस्तुओं का निर्माण भगवान विश्वकर्मा ने ही किया है ।

भगवान विश्वकर्मा ने ब्रम्हाजी की उत्पत्ति करके उन्हे प्राणीमात्र का सृजन करने का वरदान दिया और उनके द्वारा 84 लाख योनियों को उत्पन्न किया । श्री विष्णु भगवान की उत्पत्ति कर उन्हे जगत में उत्पन्न सभी प्राणियों की रक्षा और भगण.पोषण का कार्य सौप दिया । प्रजा का ठीक सुचारु रुप से पालन और हुकुमत करने के लिये एक अत्यंत शक्तिशाली तिव्रगामी सुदर्शन चक्र प्रदान किया । बाद में संसार के प्रलय के लिये एक अत्यंत दयालु बाबा भोलेनाथ श्री शंकर भगवान की उत्पत्ति की । उन्हे डमरु, कमण्डल, त्रिशुल आदि प्रदान कर उनके ललाट पर प्रलयकारी तिसरा नेत्र भी प्रदान कर उन्हे प्रलय की शक्ति देकर शक्तिशाली बनाया । यथानुसार इनके साथ इनकी देवियां खजाने की अधिपति माँ लक्ष्मी, राग-रागिनी वाली वीणावादिनी माँ सरस्वती और माँ गौरी को देकर देंवों को सुशोभित किया। हमारे धर्मशास्त्रो और ग्रथों में विश्वकर्मा के पाँच स्वरुपों और अवतारों का वर्णन प्राप्त होता है ।

विराट विश्वकर्मा : सृष्टि के रचेता

-:धर्मवंशी विश्वकर्मा:-
महान शिल्प विज्ञान विधाता प्रभात पुत्र

-:अंगिरावंशी विश्वकर्मा:-
आदि विज्ञान विधाता वसु पुत्र

-:सुधन्वा विश्वकर्म:-
महान शिल्पाचार्य विज्ञान जन्मदाता ऋशि अथवी के पात्र

-:भृंगुवंशी विश्वकर्मा:-
उत्कृष्ट शिल्प विज्ञानाचार्य (शुक्राचार्य के पौत्र)

देवगुरु बृहस्पति की भगिनी भुवना के पुत्र भौवन विश्वकर्मा की वंश परम्परा अत्यंत वृध्द है।सृष्टि के वृध्दि करने हेतु भगवान पंचमुख विष्वकर्मा के सघोजात नामवाले पूर्व मुख से सामना दूसरे वामदेव नामक दक्षिण मुख से सनातन, अघोर नामक पश्चिम मुख से अहिंमून, चौथे तत्पुरुष नामवाले उत्तर मुख से प्रत्न और पाँचवे ईशान नामक मध्य भागवाले मुख से सुपर्णा की उत्पत्ति शास्त्रो में वर्णित है। इन्हीं सानग, सनातन, अहमन, प्रत्न और सुपर्ण नामक पाँच गोत्र प्रवर्तक ऋषियों से प्रत्येक के पच्चीस-पच्चीस सन्ताने उत्पन्न हुई जिससे विशाल विश्वकर्मा समाज का विस्तार हुआ है ।

शिल्पशास्त्रो के प्रणेता बने स्वंय भगवान विश्वकर्मा जो ऋषि रुप में उपरोक्त सभी ज्ञानों का भण्डार है, शिल्पो के आचार्य शिल्पी प्रजापति ने पदार्थ के आधार पर शिल्प विज्ञान को पांच प्रमुख धाराओं में विभाजित करते हुए तथा मानव समाज को इनके ज्ञान से लाभान्वित करने के निर्मित पाणच प्रमुख शिल्पायार्च पुत्र को उत्पन्न किया जो अयस एकाष्ट, ताम्र, शिला एंव हिरण्य शिल्प के अधिषश्ठाता मनुए मयए त्वाष्ठाए शिल्पी एंव दैवज्ञा के रुप में जाने गए। ये सभी ऋषि वेंदो में पारंगत थे ।

कन्दपुराण के नागर खण्ड में भगवान विश्वकर्मा के वशंजों की चर्चा की गई है । ब्रम्ह स्वरुप विराट श्रीविश्वकर्मा पंचमुख है । उनके पाँच मुख है जो पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण और ऋषियों को मत्रों द्वारा उत्पन्न किये है । उनके नाम है। मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी और देवज्ञ ।

ऋषि मनु विष्वकर्मा: ये सानग गोत्र के कहे जाते है । ये लोहे के कर्म के उध्दगाता है । इनके वंशज लोहकार के रुप मे जानें जाते है ।

सनातन ऋषि मय: ये सनातन गोत्र के कहें जाते है । ये बढई के कर्म के उद्धगाता है। इनके वंशज काष्टकार के रुप में जाने जाते है।

अहभून ऋषि त्वष्टा: इनका दूसरा नाम त्वष्टा है जिनका गोत्र अहंभन है । इनके वंशज ताम्रक के रूप में जाने जाते है।

प्रयत्न ऋषि शिल्पी: इनका दूसरा नाम शिल्पी है जिनका गोत्र प्रयत्न है । इनके वंशज शिल्पकला के अधिष्ठाता है और इनके वंशज संगतराश भी कहलाते है इन्हें मुर्तिकार भी कहते हैं ।

देवज्ञ ऋषि: इनका गोत्र है सुर्पण । इनके वंशज स्वर्णकार के रूप में जाने जाते हैं । ये रजत, स्वर्ण धातु के शिल्पकर्म करते है।

परमेश्वर विश्वकर्मा के ये पांच पुत्र मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी और देवज्ञ शस्त्रादिक निर्माण करके संसार करते है। लोकहित के लिये अनेकानेक पदार्थ को उत्पन्न करते वाले तथा घर, मंदिर एवं भवन, मूर्तियां आदि को बनाने वाले तथा अलंकारों की रचना करने वाले है। इनकी सारी रचनाएं लोकहितकारणी हैं । इसलिए ये पांचों एवं वन्दनीय ब्राम्हण है और यज्ञ कर्म करने वाले है । इनके बिना कोई भी यज्ञ नहीं हो सकता ।

विश्वकर्मा वैदिक देवता के रूप में मान्य हैं, किंतु उनका पौराणिक स्वरूप अलग प्रतीत होता है। आरंभिक काल से ही विश्वकर्मा के प्रति सम्मान का भाव रहा है। उनको गृहस्थ जैसी संस्था के लिए आवश्यक सुविधाओं का निर्माता और प्रवर्तक कहा माना गया है। वह सृष्टि के प्रथम सूत्रधार कहे गए हैं।

देवौ सौ सूत्रधार: जगदखिल हित: ध्यायते सर्वसत्वै।

वास्तु के 18 उपदेष्टाओं में विश्वकर्मा को प्रमुख माना गया है। उत्तर ही नहींए दक्षिण भारत में भी, जहां मय के ग्रंथों की स्वीकृति रही है, विश्वकर्मा के मतों को सहज रूप में लोकमान्यता प्राप्त है। वराहमिहिर ने भी कई स्थानों पर विश्वकर्मा के मतों को उद्धृत किया है।

विष्णुपुराण के पहले अंश में विश्वकर्मा को देवताओं का वर्धकी या देव बढ़ई कहा गया है तथा शिल्पावतार के रूप में सम्मान योग्य बताया गया है।

यही मान्यता अनेक पुराणों में आई हैए जबकि शिल्प के ग्रंथों में वह सृष्टिकर्ता भी कहे गए हैं। स्कंदपुराण में उन्हें देवायतनों का सृष्टा कहा गया है। कहा जाता है कि वह शिल्प के इतने ज्ञाता थे कि जल पर चल सकने योग्य खड़ाऊ तैयार करने में समर्थ थे।

छठ पूजा लोक आस्था का पर्व

दीवाली के ठीक छह दिन बाद मनाए जाने वाले छठ महापर्व का हिंदू धर्म में विशेष स्थान है। कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की षष्ठी को सूर्य षष्ठी का व्रत करने का विधान है । अथर्ववेद में भी इस पर्व का उल्लेख है।

यह ऐसा पूजा विधान है जिसे वैज्ञानिक दृष्टि से भी लाभकारी माना गया है। ऐसी मान्यता है कि सच्चे मन से की गई इस पूजा से मानव की मनोकामनाएं पूर्ण हो जाती हैं। इसे करने वाली स्त्रियां धन-धान्य, पति-पुत्र तथा सुख-समृद्धि से परिपूर्ण रहती हैं। छठ पूजा के इतिहास की ओर दृष्टि डालें तो इसका प्रारंभ महाभारत काल में कुंती द्वारा सूर्य की आराधना व पुत्र कर्ण के जन्म के समय से माना जाता है। मान्यता है कि छठ देवी सूर्य देव की बहन हैं और उन्हीं को प्रसन्न करने के लिए जीवन के महत्वपूर्ण अवयवों में सूर्य व जल की महत्ता को मानते हुएए इन्हें साक्षी मान कर भगवान सूर्य की आराधना तथा उनका धन्यवाद करते हुए मां गंगा-यमुना या किसी भी पवित्र नदी या पोखर या तालाब के किनारे यह पूजा की जाती है। प्राचीन काल में इसे बिहार और उत्तर प्रदेश में ही मनाया जाता था।

लेकिन आज इस प्रान्त के लोग विश्व में जहाँ भी रहते हैं वहाँ इस पर्व को उसी श्रद्धा और भक्ति से मनाते हैं। यह व्रत बडे नियम तथा निष्ठा से किया जाता है। इसमे तीन दिन के कठोर उपवास का विधान है । इस व्रत को करने वाली स्त्रियों को पंचमी को एक बार नमक रहित भोजन करना पडता है। षष्ठी को निर्जल रहकर व्रत करना पडता है । षष्ठी को अस्त होते हुए सूर्य को विधिपूर्वक पूजा करके अर्घ्य देते हैं। सप्तमी के दिन प्रातःकाल नदी या तालाब पर जाकर स्नान करती हैं। सूर्योदय होते ही अर्घ्य देकर जल ग्रहण करके व्रत को खोलती हैं।

यह पर्व सूर्यषष्ठी के नाम से विख्यात है। छठ का पर्व तीन दिनों तक मनाया जाता है।

इसे छठ से दो दिन पहले चौथ के दिन शुरू करते हैं जिसमें दो दिन तक व्रत रखा जाता है। इस पर्व की विशेषता है कि इसे घर का कोई भी सदस्य रख सकता है तथा इसे किसी मन्दिर या धार्मिक स्थान में न मना कर अपने घर में देवकरी पूजा-स्थल व प्राकृतिक जल राशि के समक्ष मनाया जाता है। तीन दिन तक चलने वाले इस पर्व के लिए महिलाएँ कई दिनों से तैयारी करती हैं इस अवसर पर घर के सभी सदस्य स्वच्छता का बहुत ध्यान रखते हैं जहाँ पूजा स्थल होता है वहाँ नहा धो कर ही जाते हैं यही नही तीन दिन तक घर के सभी सदस्य देवकरी के सामने जमीन पर ही सोते हैं।

पर्व के पहले दिन हाय-खाय को पूजा में चढ़ावे के लिए सामान तैयार किया जाता है जिसमें सभी प्रकार के मौसमी फल, केले की पूरी गौर (गवद) इस पर्व पर खासतौर पर बनाया जाने वाला पकवान ठेकुआ बिहार में इसे खजूर कहते हैं। यह बाजरे के आटे और गुड़ व तिल से बने हुए पुए जैसा होता है, नारियल, मूली, सुथनी, अखरोट, बादाम, नारियल इस पर चढ़ाने के लिए लाल, पीले रंग का कपड़ा, एक बड़ा घड़ा जिस पर बारह दीपक लगे हो गन्ने के बारह पेड़ आदि। पहले दिन महिलाएँ अपने बाल धो कर चावल, लौकी और चने की दाल का भोजन करती हैं और देवकरी में पूजा का सारा सामान रख कर दूसरे दिन आने वाले व्रत की तैयारी करती हैं। छठ पर्व पर दूसरे दिन पूरे दिन व्रत उपवास रखा जाता है और शाम को गन्ने के रस की बखीर बनाकर देवकरी में पांच जगह कोशा, मिट्टी के बर्तन में बखीर रखकर उसी से हवन किया जाता है।

मान्यता है कि छठ देवी सूर्य देव की बहन हैं और उन्हीं को प्रसन्न करने के लिए जीवन के महत्वपूर्ण अवयवों में सूर्य व जल की महत्ता को मानते हुएए इन्हें साक्षी मान कर भगवान सूर्य की आराधना तथा उनका धन्यवाद करते हुए मां गंगा-यमुना या किसी भी पवित्र नदी या पोखर या तालाब के किनारे यह पूजा की जाती है। प्राचीन काल में इसे बिहार और उत्तर प्रदेश में ही मनाया जाता था।

जालंधर लीगल सेल के अध्यक्ष लखन गांधी ने बीजेपी कार्यालय शीतला माता मंदिर में बिहार में मिली जीत की खुशी में लड्डू बांटे

• जालंधर ब्रीज/रवि

बिहार के चुनावों में भाजपा को पूर्ण बहुमत मिलने की खुशी में बीजेपी लीगल सेल के अध्यक्ष लखन गांधी को भाजपा कार्यालय शीतला मंदिर जालंधर में लड्डू खिला कर सम्मानित किया गया और लखन गांधी ने कहा कि आने वाले इलेक्शन में बीजेपी को जीता कर कांग्रेस को हराकर उसे मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा।

इस अवसर पर मौजूद सुशील शर्मा दविंदर सिंह लबाना, गौरव ,आनंद, रोबिन सेठी ,अश्विनी कुमार, रीत कौर आदि मौजूद थे।

जालंधर में ट्रक ड्राइवर के पास 25 किलो चूरा पोस्त मिला

• जालंधर/रवि

पंजाब के जालंधर जिले की पुलिस ने श्रीनगर से चूरा-पोस्त की तस्करी करके पंजाब में सप्लाई करने वाले एक ट्रक चालक को गिरफ्तार किया है। आरोपी से 25 किलो चूरा पोस्त बरामद किया गया है। पुलिस ने उसका ट्रक भी ज़ब्त कर लिया है। माल की सप्लाई की आड़ में यह तस्करी की जा रही थी। जालंधर रूरल पुलिस के एसएसपी डॉ. संदीप कुमार गर्ग ने बताया कि थाना भोगपुर के एएसआई सतपाल सिंह कुरेशिया नाके पर मौजूद थे। उन्हें मुखबिर से सूचना मिली थी कि फतेहगढ़ साहिब जिले के गांव भड़ी का रहने वाला जसदीप सिंह उर्फ जस्सी ट्रक नंबर PB11CN 8955 चलाता है। इस ट्रक में वह माल में छिपाकर श्रीनगर से चूरा-पोस्त लाकर अलग-अलग शहरों में सप्लाई करता है। मुखबिर ने बताया कि जसदीप सिंह ट्रक में श्रीनगर से चूरा पोस्त लेकर आया

है और ट्रक को मेन जीटी रोड पर कुरेशिया के नजदीक बादशाह ढाबा के पास खड़ा करके ग्राहक का इंतजार कर रहा है। सूचना मिलते ही एएसआई ने टीम के साथ वहां छापा मारा। ट्रक की तलाशी ली गई तो आगे केबिन में क्लीनर सीट के नीचे बने बक्से से प्लास्टिक का बोरा बरामद किया, जिसमें से 25 किलो चूरा पोस्त बरामद हुआ। पुलिस टीम ने तुरंत कार्रवाई करते हुए चालक जसबीर जस्सी को गिरफ्तार कर लिया। इसके बाद पुलिस ने ट्रक और उसका मोबाइल भी जब्त कर लिया। मोबाइल के जरिए पुलिस नशा तस्करों का पता लगाने में जुट गई है। जस्सी के खिलाफ एनडीपीसी एक्ट के तहत केस दर्ज किया गया है।

पंजाब अचीवमेंट सर्वे का आखिरी पड़ाव शुरू, इसे लेकर विद्यार्थियों में भारी उत्साह

• चंडीगढ़/ब्यूरो

पंजाब स्कूल शिक्षा विभाग ने आज पंजाब अचीवमेंट सर्वे (पी.ए.एस.) के आख़िरी पड़ाव का काम शुरू कर दिया है, जिसे लेकर विद्यार्थियों में भारी उत्साह देखा जा रहा है। इस सर्वे का आयोजन सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों के विद्यार्थियों के सीखने के नतीजों का मूल्यांकन करवाने के लिए किया गया है।

प्रवक्ता के अनुसार प्राईमरी से लेकर सीनियर सेकेंडरी कक्षाओं के विद्यार्थियों का सर्वे आज 11 नवंबर को शुरू हुआ और प्राईमरी कक्षाओं का सर्वे 17 नवंबर तक चलेगा। हाई स्कूल के विद्यार्थियों का सर्वे 20 नवंबर और सीनियर सेकेंडरी स्कूलों के विद्यार्थियों का सर्वे 24 नवंबर को ख़त्म होगा। प्री-प्राईमरी कक्षाओं के विद्यार्थियों का सर्वेक्षण 18नवंबर से शुरू होकर 21 नवंबर तक चलेगा।

प्रवक्ता के अनुसार आख़िरी दौर के सर्वे में विद्यार्थियों की ओर से भारी उत्साह दिखाया जा रहा है। बड्डी ग्रुपों द्वारा उन विद्यार्थियों की ख़ास तौर पर मदद की जा रही है, जिनके पास मोबाइल नहीं हैं। इस पड़ाव के लिए अध्यापकों ने भी घर-घर जाकर विद्यार्थियों को सर्वे में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। शिक्षा मंत्री श्री विजय इंदर सिंगला के दिशा-निर्देशों के अनुसार इस सर्वे का पहला पड़ाव 21 सितम्बर से शुरू हुआ था।

प्रवक्ता के अनुसार इस सर्वे से विद्यार्थियों में प्रतियोगी परीक्षाओं संबंधी समझ बढ़ेगी और इससे शिक्षा में गुणात्मक बदलाव आएगा। उन्होंने कहा कि इस दौरान अधिकांश प्रश्न वस्तुनिष्ठ प्रकार से पूछे जा रहे हैं, जिनसे विद्यार्थियों में सोचने की क्षमता तेज़ होगी। इसके साथ ही विद्यार्थियों के कौशल में विस्तार होने के कारण यह सर्वे भविष्य में उनके लिए बहुत ज़्यादा लाभप्रद होगा।

जेल से छूटने के बाद अर्नब गोस्वामी ने उद्धव ठाकरे को दी चुनौती, कहा- खेल अब शुरू हुआ है

• मुंबई/ब्यूरो

न्यायिक हिरासत में एक सप्ताह जेल में गुजारने और उच्चतम न्यायालय से जमानत मिलने के बाद फिर से न्यूज रूम पहुंचे पत्रकार अर्नब गोस्वामी ने ''फर्जी मामले में उन्हें गिरफ्तार करने को लेकर महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे पर बुधवार को हमला बोला। रिपब्लिक चैनल में अपने सहकर्मियों से घिरे गोस्वामी (47) ने कहा, उद्धव ठाकरे, सुन लो मुझे. आप हार गए।

भाजपा के वरिष्ठ नेता देवेंद्र फडणवीस ने भी आत्महत्या के लिए उकसाने के मामले में गिरफ्तार रिपब्लिक टीवी के प्रधान संपादक को अंतरिम जमानत देने के उच्चतम न्यायालय के फैसले का स्वागत करते हुए बुधवार को कहा कि महाराष्ट्र की महाविकास अघाडी सरकार को उसका स्थान दिखा दिया गया है।

सुप्रीम कोर्ट को लेकर ट्वीट करने पर कॉमेडियन कुणाल कामरा के खिलाफ अवमानना का केससुप्रीम कोर्ट को लेकर ट्वीट करने पर कॉमेडियन कुणाल कामरा के खिलाफ अवमानना का केस केवल सोशल मीडिया के जरिये दीपावली की शुभकामनाएं स्वीकार करूंगा। अर्नब गोस्वामी ने एक इंटीरियर डिजाइनर को कथित तौर पर खुदकुशी के लिए उकसाने के 2018 के मामले में अपनी ''अवैध गिरफ्तारी पर मुंबई के पुलिस आयुक्त परमबीर सिंह को भी आड़े हाथों लिया. गोस्वामी ने कहा कि तलोजा जेल में

उनसे पुलिस तीन दौर की पूछताछ करती थी।

उन्होंने कहा, उद्धव ठाकरे आपने मुझे एक पुराने, फर्जी मामले में गिरफ्तार किया, और मुझसे माफी तक नहीं मांगी।

उन्होंने कहा,खेल अब शुरू हुआ है। गोस्वामी ने कहा कि वह हर भाषा में रिपब्लिक टीवी शुरू करेंगे और अंतरराष्ट्रीय मीडिया में भी उनकी उपस्थिति है। फिर से गिरफ्तार होने की आशंका व्यक्त करते हुए गोस्वामी ने कहा, मैं जेल के अंदर से भी (चैनल) शुरू करूंगा, और आप (ठाकरे) कुछ नहीं कर पाएंगे। गोस्वामी ने अंतरिम जमानत देने के लिए शीर्ष अदालत का आभार जताया।

भाजपा के वरिष्ठ नेता देवेंद्र फडणवीस ने आत्महत्या के लिए उकसाने के मामले में गिरफ्तार रिपब्लिक टीवी के प्रधान संपादक को अंतरिम जमानत देने के उच्चतम न्यायालय के फैसले का स्वागत करते हुए बुधवार को कहा कि महाराष्ट्र की महा विकास अघाडी सरकार को उसका स्थान दिखा दिया गया है। पूर्व मुख्यमंत्री ने शिवसेना की अगुवाई वाली सरकार पर राज्य में आपातकाल जैसी स्थिति बनाने का आरोप लगाया।

विधानसभा में विपक्ष के नेता फडणवीस ने पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि राज्य सरकार ने अदालत की इजाजत लिए बिना बंद मामले को खोल दिया और गोस्वामी के साथ सड़क के अपराधी की तरह सुलूक किया।

उन्होंने आरोप लगाया, उन्हें (गोस्वामी) को सरकार ने प्रताड़ित किया और एक जेल से दूसरी जेल भेजती रही। यह सरकार निजी दुश्मनी की वजह से उनके पीछे पड़ी है।

SPORTS PLANET

धोनी इस साल की तरह बिना मैच अभ्यास के इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में खेलने का फैसला करते हैं तो उनके लिए अच्छा प्रदर्शन करना असंभव होगा। -महेन्द्र सिंह धोनी

स्पोर्ट्स प्लैनट

अनुशासन की वजह से आज चैंज़ियन बने-रोहित शर्मा

• दुंबई/ब्यूरो

आई.पी.एल. फाइनल में डिफेंडिंग चैम्पियन मुंबई इंडियंस ने दिल्ली कैपिटल्स को हराकर 5वीं बार खिताब जीता। बीसीसीआई अध्यक्ष सौरव गांगुली और सचिव जय शाह टीम के कैप्टन रोहित को ट्रॉफी देते हुए। आई.पी.एल के 13वें सीजन में चैम्पियन मुंबई इंडियंस के कप्तान रोहित शर्मा ने ड्रेसिंग रूम में साथियों खिलाड़ी और स्टाफ के बीच स्पीच दी। उन्होंने रोहित कहा कि मुश्किल वक्त में भी हमने अगस्त से पहले ही तैयारियां शुरू कर दी थी। फील्ड के अंदर और बाहर अनुशासन की वजह से आज टीम चैम्पियन बनी। फ्रेंचाइजी ने स्पीच का वीडियो शेयर किया। ड्रेसिंग रूम में रोहित के साथ पत्नी रितिका भी साथ नजर आईं। इस बार आई.पी.एल.में मुंबई ने फाइनल में दिल्ली कैपिटल्स को हराकर 5वीं बार खिताब जीता।

जून का महीना काफी मुश्किल रहा

रोहित ने कहा- ''यह सीजन हमारे लिए शानदार रहा। इसके लिए हमने अगस्त से पहले ही तैयारियां शुरू कर दी थीं। मुझे याद है कि जून में हमारे लिए काफी मुश्किल समय था। इसके बावजूद हमने तैयारियां जारी रखीं, लेकिन ये कभी आसान नहीं रहा। यहां (यूएई) जब हम आए तो हमें अलग वातावरण मिला। टीम के तौर पर हमने न सिर्फ होटल, बल्कि मैदान पर भी अनुशासन बनाए रखा। यही वजह है कि आज हम ट्रॉफी के साथ यहां खड़े हैं।''

रोहित ऑस्ट्रेलिया में टेस्ट सीरीज खेलेंगे

टीम इंडिया बिना रोहित के 11 नवंबर को ऑस्ट्रेलिया दौरे के लिए रवाना हो गई है। टीम को वहां सबसे पहले 27 नवंबर से 3 वनडे और इतने ही टी-20 खेलने हैं। इसके बाद भारतीय टीम 17 दिसंबर से 4 टेस्ट की सीरीज खेली। रोहित टेस्ट सीरीज के लिए टीम को जॉइन करेंगे।

आई.पी.एल. फाइनल में रोहित की फिफ्टी

आई.पी.एल. फाइनल में दिल्ली को 5 विकेट से हराकर डिफेंडिंग चैम्पियन मुंबई ने लगातार दूसरी और लीग में 5वीं बार खिताब जीता। दुबई के मैदान पर दिल्ली ने टॉस जीतकर पहले बैटिंग करते हुए 157 रन का टारगेट दिया था। इसके जवाब में मुंबई ने 18.4 ओवर में 5 विकेट गंवाकर 157 रन बनाते हुए मैच जीत लिया। रोहित ने सबसे ज्यादा 51 बॉल में 68 और ईशान किशन ने 19 बॉल में 33 रन बनाए।

कमिंस ने 1.29 करोड़ में 1 विकेट लिया, जबकि चहल ने हर विकेट की कीमत साढ़े 28 लाख रही

• नई दिल्ली/ब्यूरो

आईपीएल का 13वां सीजन खत्म हो गया है। विजेता भले ही मुंबई इंडियंस टीम रही हो, पर हरियाणा ने भी झंडे कम नहीं गाड़े। हमारे महज 9 खिलाड़ी अलग-अलग टीमों में थे, पर उम्दा प्रदर्शन के चलते वे चर्चा में रहे। नीलामी में जिन तीन खिलाड़ियों की सबसे ज्यादा बोली लगी थी, उनसे तुलना करें तो हरियाणा के कम कीमत वाले खिलाड़ियों का प्रदर्शन ज्यादा अच्छा रहा। 1.29 करोड़ रुपए की दर से विकेट वाले सबसे महंगे रहे कमिंस के मुकाबले जींद के युजवेंद्र चहल ने महज साढ़े 28 लाख की औसत रेट से विकेट चटकाए। फरीदाबाद के राहुल तेवतिया ने जहां अपने पदर्शन से सभी को चौंकाया तो करनाल के नवदीप सैनी सबसे तेज भारतीय गेंदबाज रहे। दिल्ली की टीम में शामिल मोहित शर्मा मैदान पर नहीं उतरे तो अमित मिश्रा 3 मैच के बाद ही चोटिल होकर बाहर हो गए।

इस बार की सबसे महंगी बोली वाले खिलाड़ियों का प्रदर्शन

1. पैट कमिंस ऑस्ट्रेलियाई पेसर। इन्हें कोलकाता नाइटराइडर्स ने 15.50 करोड़ रुपए में खरीदा था। 14 मैचों में 12 विकेट लिए। इनका 1 विकेट लगभग 1 करोड़ 29 लाख रुपए का पड़ा।

2. ग्लेन मैक्सवेल ऑस्ट्रेलिया के ऑलराउंडर। इन्हें किंग्स इलेवन पंजाब ने 10.75 करोड़ में खरीदा। 13 मैचों में 108 रन बनाए। इनका एक रन लगभग पौने दस लाख रुपए का पड़ा।

3. क्रिस मॉरिस को रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने 10 करोड़ में खरीदा था। इन्होंने 9 मैचों में 11 विकेट लिए। ऐसे में इनका एक विकेट 90 लाख से अधिक का पड़ा।

युजवेंद्र: टॉप 4 गेंदबाजों में स्थान

जींद के युजवेंद्र चहल। आरसीबी के सबसे बड़े विकेट टेकर। प्राइस 6 करोड़। 15 मैच में 21 विकेट झटके। सीजन में विकेट लेने में चौथे व इंडियन गेंदबाजों में दूसरे क्रिकेटर। इनका एक विकेट 28.57 लाख रुपए का पड़ा।

नवदीप सैनी: सबसे तेज फेंकी

करनाल के नवदीप सैनी। आरसीबी में 3 करोड़ में खरीदा था। इन्होंने भारतीय गेंदबाजों में सबसे तेज 149.3 किमी प्रति घंटा की स्पीड वाली गेंद डाली। 13 मैचों में 6 विकेट लिए। 3 पारियों में 27 रन बनाए। 1 विकेट 50 लाख की पड़ी

तेवतिया: 255 रन व 10 विकेट

फरीदाबाद के राहुल तेवतिया। पंजाब के खिलाफ एक ओवर में 5 छक्के मारकर राजस्थान को जीत दिलाई। 14 मैचों में 10 विकेट लिए। 11 पारियों में 255 रन बनाए। एक रन 1.17 लाख व 1 विकेट 30 लाख की पड़ी।

दीपक हुड्डा: किफायती खिलाड़ी

रोहतक के दीपक हुड्डा पंजाब से अंतिम 7 मैच खेले। 50 लाख रुपए थी कीमत। 5 पारियों में 101 रन बनाए। इनका एक रन केवल 49504 रु. का पड़ा। 4 पारियों में नॉट आउट रहे। बल्लेबाजी औसत सबसे बेहतर 101 रहा।

1 खिलाड़ी उतरा ही नहीं, एक चोटिल

शहजाद अहमद: मेवात में जन्म। आरसीबी से 2 मैच खेले। बेस प्राइस 20 लाख रुपए था। 2 विकेट झटके। इनका 1 विकेट 20 लाख रुपए का पड़ा।

हर्षल पटेल: जन्म गुजरात में हुआ, पर रणजी हरियाणा से खेलते हैं। दिल्ली ने 20 लाख में खरीदा था। 5 मैच में 3 विकेट लिए। एक विकेट 6.66 लाख रु. का पड़ा।

अमित मिश्रा: हरियाणा की रणजी टीम के कप्तान रहे मिश्रा को दिल्ली ने 4 करोड़ रु. में खरीदा था।3 मैचों में 3 विकेट लिए। 80ह से कम खेले, फीस से पैसे कट सकते हैं।

जयंत यादव: दिल्ली से हैं, हरियाणा से रणजी खेलते हैं। इनका प्राइस 50 लाख रुपए था। मुंबई से 3 मैच खेले। एक विकेट लिया।

मोहित शर्मा: हरियाणा के मोहित शर्मा दिल्ली की टीम में थे। एक ही मैच खेले। इनका प्राइस 50 लाख रुपए था और इस एक मैच में भी केवल 1 ही विकेट ले पाए।

सरकारी हाई स्कूल जगराल की अंग्रेजी अध्यापिका कुमारी निधि पराशर द्वारा नाना जी की याद पर स्कूल को इनवर्टर देने पर सम्मानित किया गया

जालंधर ब्रीज/रवि

सरकारी हाई स्कूल जगराल की अंग्रेजी अध्यापिका कुमारी निधि पराशर ने अपने स्वर्गवासी नाना जी कैप्टन ज्ञानदास कहोल की याद में स्कूल को इनवर्टर दान किया। उनके इस ऊपराले पर स्कूल के मुख्य अध्यापक सरदार लखवंत सिंह और अन्य स्टाफ ने उनको सम्मानित किया।

Printed, Published & Owner by ATUL SHARMA & Printed at SARANGLE PRINTERS, BASTI GUZAN JALANDHAR (PUNJAB) and Published from ATUL SHARMA, NN-453 GOPAL NAGAR JALANDHAR (PUNJAB)

Editor: ATUL SHARMA*

*Responsible for selection of News under the PRB ACT. PUNHIN/2019/77863, All Rights Reserved. Reproduction in whole or in part without permission is prohibited. All disputes shall be settled at Jalandhar jurisdiction only.